खण्ड – 2 : प्रमुख विचारक – 1

इकाई – 4 : सैम्युअल टेलर कॉलरिज

इकाई की रूपरेखा

2.4.0. उद्देश्य कथन
2.4.1. प्रस्तावना
2.4.2. सैम्युल टेलर कॉलरिज : व्यक्ति परिचय
2.4.2.1. व्यक्तित्व
2.4.2.2. कृतियाँ
2.4.3. सैम्युल टेलर कॉलरिज का काव्य चिन्तन
2.4.3.1. काव्य की परिभाषा
2.4.3.2. काव्य और छन्द
2.4.3.3. काव्य और भाषा
2.4.3.4. कल्पना सिद्धान्त
2.4.4. सैम्युल टेलर का काव्यशास्त्रीय अवदान
2.4.5. सारांश
2.4.6. शब्दावली
2.4.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची
2.4.8. सम्बन्धित प्रश्न

2.4.0. उद्देश्य कथन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र पाठ्यचर्या के अन्तर्गत प्रमुख विचारक-1 खण्ड की पिछली इकाई में आप विलियम वर्ड्सवर्थ के विचारों को पढ़ चुके हैं। अंग्रेजी में स्वच्छंदतावाद के प्रवर्तकों में विलियम वर्ड्सवर्थ के साथ सैम्युअल टेलर कॉलरिज का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। वस्तुतः इन दोनों विचारकों के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'लिरिकल बैलेड्स' के प्रकाशन काल यानी 1978 ई. से अंग्रेजी साहित्य की परम्परा व विकासक्रम में 'स्वच्छंदतावाद' का आरम्भ माना जाता है। इसलिए प्रस्तुत इकाई में सैम्युअल टेलर कॉलरिज के काव्यशास्त्रीय योगदान की चर्चा की गई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

2.4.0.1. स्वच्छंदतावादी काव्य सिद्धान्तों के आलोक में सैम्युअल टेलर कॉलरिज के युगान्तकारी योगदान की चर्चा कर सकेंगे।

2.4.0.2. सैम्युअल टेलर कॉलरिज का काव्य चिन्तन के आलोक में काव्य की परिभाषा, काव्य और छन्द, काव्य और भाषा से परिचित हो सकेंगे।

2.4.0.3. सैम्युअल टेलर के कल्पना सिद्धान्त की व्याख्या कर सकेंगे।

2.4.0.4. सैम्युअल टेलर कॉलरिज के काव्यशास्त्रीय अवदान का विश्लेषण कर सकेंगे।

2.4.1. प्रस्तावना

पाश्चात्य परम्परा में स्वच्छंदतावादी काव्य चिन्तन की आधारभूमि सामाजिक यथार्थ और साहित्य का सामाजिक सन्दर्भ है। साथ ही उस आलोच्य परम्परा में काव्य की आत्मा, काव्य के तत्त्व, काव्य के प्रेरक उपकरण, काव्य का प्रयोजन, काव्य एवं कला का स्वरूप काव्य भाषा और रचना प्रक्रिया पर विचारशीलता के नए आयाम उद्घाटित हुए हैं। विदित है कि पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय विकासक्रम में अठ्ठारहवीं सदी के अन्त तक परम्परागत प्रतिमानों की चमक फीकी पड़ चुकी थी। और, परम्परागत मान्यताओं के आधार पर पाश्चात्य काव्य चिन्तन की परख नहीं की जा सकती थी। ऐसे में सैम्युअल टेलर कॉलरिज अंग्रेजी साहित्य में विलियम वर्ड्सवर्थ के साथ मिलकर स्वच्छंदतावादी आन्दोलन के प्रवर्तक के रूप में प्रख्यात हैं। ये दोनों चूँकि समसामयिक थे और उनकी काव्य चेतना का विकास साथ-साथ हुआ था, इसलिए उनका परिवेश प्राय: एक जैसा था। अपनी साहित्यिक चेतना के विकास के आरम्भिक चरण में विलियम वर्ड्सवर्थ की भाँति सैम्युअल टेलर कॉलरिज पर भी फ्रांसीसी क्रान्ति का महत्त्वपूर्ण प्रभाव था। इस आलोक में उनकी मौलिक चेतना, निबन्ध व काव्यशास्त्रीय चिन्तन कई अर्थों में अद्वितीय है, उल्लेखनीय है।

2.4.2. सैम्युल टेलर कॉलरिज : व्यक्ति परिचय

काव्य सत्ता को उसी के भीतर से पहचानने और परखने का प्रयास पश्चिमी काव्यशास्त्र के अन्तर्गत पहली बार स्वच्छंदतावादी समीक्षा के अन्तर्गत ही हुआ है। इस सन्दर्भ में सैम्युअल टेलर कॉलरिज का प्रदेय विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। वैसे तो उन्होंने अपना जीवन एक कवि के रूप में शुरू किया था, लेकिन बहुत जल्दी ही वे काव्य रचना से विरक्त होकर दर्शन, मनोविज्ञान और साहित्य समीक्षा की ओर अभिप्रेरित हो गए। उनका अध्ययन अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक था और उस समय तक ज्ञान-विज्ञान का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र था जहाँ तक सैम्युअल टेलर कॉलरिज की समझ न हो। और, उनके व्यक्तित्व में रचनात्मक अन्त:दृष्टि का उन्मेष सहज ही देखा जा सकता है।

2.4.2.1. व्यक्तित्व

सैम्युअल टेलर कॉलरिज का जन्म 1772 ई. में हुआ। वे बचपन से ही चिन्तनशील प्रकृति के थे। उनकी आरम्भिक शिक्षा क्राइस्ट्स हॉस्पिटल में पूरी हुई। पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में ही कॉलरिज की तत्त्वमीमांसा और धर्मशास्त्रीय विवादों में गहरी व अद्भुत अभिरुचि थी। आगे चलकर वर्ष 1791 ई. में उन्होंने सुविख्यात जेसस कॉलेज कैंब्रिज में प्रवेश लिया और वहाँ रहकर लोकतंत्र, गणतंत्रवाद, मानव प्रेम, समतामूलक राजव्यवस्था और बंधुता आदि के बारे में अपने क्रान्तिकारी विचारों को खुले तौर पर अभिव्यक्त करना आरम्भ कर दिया। हालाँकि, यह दौर अधिक समय तक नहीं चला। महज तीन साल बाद यानी 1794 ई. में ही वैचारिक मतभेदों के चलते स्नातक की उपाधि लिए बिना ही उन्होंने विश्वविद्यालय छोड़ दिया। समय बीतने के साथ साथ राजनीति, धर्म,

दर्शन आदि के बारे में उनके विचारों में धीरे-धीरे बदलाव आया। पहले वे न्यूटन, बेकन, लॉक, हार्टले आदि विचारकों के भौतिकवादी-अनुभववादी दर्शन से प्रभावित हुए तो बाद में उन्होंने काण्ट, शेलिंग, फिक्टे आदि जर्मन दार्शनिकों के विचारों का विस्तार से अध्ययन किया। इतना ही नहीं, जर्मनी के भाववादी दर्शन भी का उनके चिन्तन व व्यक्तित्व पर गहरा असर था। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में गम्भीरता, दुरूहता तथा विशृंखलता के एक साथ दर्शन होते हैं।

2.4.2.2. कृतियाँ

सैम्युअल टेलर कॉलरिज मूलत: एक कवि नहीं, बल्कि आलोचक हैं। उन्होंने बहुत निकट तक आलोचना को दर्शन और मनोविज्ञान से सम्बद्ध किया है। रोमांटिक युग के महान् कवि और दार्शनिक के रूप में भी उनका चिन्तन अभूतपूर्व है। 'फ्रांस ऐन ओड', 'फियर्स इन सॉलिच्यूड' कॉलरिज की उल्लेखनीय कविताएँ हैं। हालाँकि, विलियम वर्ड्सवर्थ के साथ उनकी कृति (काव्य संग्रह) 'लिरिकल बैलेड्स' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना मानी जाती है। इस संग्रह में संकलित कुल 23 कविताओं में चार कविताएँ टेलर कॉलरिज की हैं।

ज्ञातव्य है कि 'लिरिक' या प्रगीत का सम्बन्ध स्वच्छंदतावाद से जोड़ा जाता है। 'बैलेड' यानी गाथागीत, शेक्सपियर और उसके पूर्ववर्ती युग का लोकप्रिय काव्यस्वरूप था जो कि लोक परम्परा में विकसित हुआ था। इस तरह 'लिरिकल बैलेड्स' शीर्षक में ही यह अभिव्यंजना है कि इस संग्रह के माध्यम से वर्ड्सवर्थ और कॉलरिज जहाँ एक ओर लिरिक कविता का विकास कर रहे थे तो दूसरी ओर उसका सम्बन्ध प्राचीन लोक साहित्य से भी जोड़ रहे थे।

सैम्युअल टेलर कॉलरिज की आलोचनात्मक कृतियों में सबसे रेखांकनीय रचना 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' (1817) है जिसे अंग्रेजी साहित्य में 'आलोचना की सबसे महान् पुस्तक' की संज्ञा दी गई है। इसमें दर्शन और साहित्य समीक्षा का स्पष्ट संयोग परिलक्षित होता है। इतना ही नहीं, सेंट्सबरी जैसे सुप्रसिद्ध इतिहासकार कॉलरिज को अरस्तू, लोंजाइनस के बाद तीसरा स्थान प्रदान करते हैं।

2.4.3. सैम्युल टेलर कॉलरिज का काव्य चिन्तन

सैम्युअल टेलर कॉलरिज ने दर्शन और तत्त्व चिन्तन के आधार पर अपने काव्य सिद्धान्तों की स्थापना की है। उसके विचार में संसार के पदार्थ ब्रह्म के विषय या विचार हैं और जगत् विषयकृत ब्रह्म है। ब्रह्म और प्रकृति का संयोग कल्पना के द्वारा होता है। इसमें संदेह नहीं कि कॉलरिज के काव्य चिन्तन पर जर्मन दार्शनिकों का प्रभाव है, किन्तु कॉलरिज ने उनकी नकल नहीं की है। जर्मन विचारकों के सिद्धान्तों को आत्मसात् करके कॉलरिज ने उसे पूरी मौलिकता के साथ अपने चिन्तन में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। कॉलरिज के काव्यशास्त्रीय चिन्तन की समग्रता को काव्य की परिभाषा, काव्य और छन्द, काव्य और भाषा तथा कल्पना सिद्धान्त के आलोक में समझा जा सकता है।

2.4.3.1. काव्य की परिभाषा

कविता को समझने के लिए आलोचना आधुनिक काल की देन है। वस्तुतः (पाश्चात्य) स्वच्छंदतावादी युग में कॉलरिज जैसे समीक्षकों ने काव्य सर्जना के मूल्यांकन हेतु परम्परागत समीक्षा पद्धति से अलग प्रतिमान दिए। साथ ही परम्परागत प्रतिमानों को नए सन्दर्भों में जाँचा-परखा गया। इस आलोक में कविता और समीक्षा का समूचा ताना-बाना अपने शिखर पुरुष कॉलरिज के सृजनशील व्यक्तित्व और सिद्धान्तों के इर्द-गिर्द बुना गया तो आलोच्य दौर में समीक्षकों को काव्य समीक्षा की नई जमीन तैयार करनी पड़ी।

काव्य चिन्तन के सन्दर्भ में सैम्युअल टेलर कॉलरिज गद्य और कविता दोनों के लिए एक ही माध्यम की स्थापना करते हैं और दोनों ही माध्यम रूप में वे शब्दों का प्रयोग करते हैं। हालाँकि, दोनों में अन्तर है। दोनों अपने-अपने प्रयोजन के अुनरूप शब्दों का प्रयोग समान ढंग से नहीं करते हैं, बल्कि अलग ढंग से करते हैं। इसी प्रयोजन के आधार पर अपनी महत्त्वपूर्ण रचना 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' के अध्याय-14 में कविता को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा है कि "कविता रचना का वह प्रकार है जो वैज्ञानिक कृतियों से इस अर्थ में भिन्न है कि उसका तात्कालिक प्रयोजन आनन्द है, सत्य नहीं; और, रचना के अन्य सभी प्रकारों से इसका अन्तर यह है कि इसमें सम्पूर्ण से वही आनन्द प्राप्त होना चाहिए जो उसके प्रत्येक खण्ड (घटक) से प्राप्त होने वाले परितोष के अनुरूप हो"। इस प्रकार परिभाषा के प्रथम खण्ड में कॉलरिज ने रचनात्मक साहित्य और ज्ञान के साहित्य के बीच भारतीय काव्यशास्त्र की शब्दावली में 'काव्य' और 'शास्त्र' के बीच अन्तर किया है। प्रत्येक का एक तात्कालिक प्रयोजन है, दूसरा आत्यन्तिक। इस प्रकार काव्य का तात्कालिक प्रयोजन 'आनन्द' है, जबकि शास्त्र का आत्यन्तिक प्रयोजन 'सत्य' है।

परिभाषा के द्वितीय खण्ड में उन्होंने कविता और रचनात्मक साहित्य के अन्य प्रकारों (उपन्यास, नाटक आदि) में अन्तर स्पष्ट करते हुए कविता का वैशिष्ट्य रेखांकित किया है। वैसे आनन्द तो दोनों में सामान्य है, किन्तु कविता में उसके प्रत्येक तत्त्व से भी स्पष्ट आनन्द की अनुभूति होगी और यह आनन्द कुल मिलाकर पूरी कविता के आनन्द के समान होगा। निःसन्देह यहाँ पूरा फोकस रचना के गठन की पूर्णता और आवयविकता पर है। चूँकि, साहित्य की अन्य विधाएँ इतनी सुगठित नहीं होतीं, इसलिए कॉलरिज द्वारा सन्दर्भानुकूल यह मत सुनिश्चित किया गया है कि गद्य शब्दों का उत्तम क्रम विधान है, जबकि कविता उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रम विधान है।

ध्यातव्य है कि 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' के अध्याय-14 में ही कॉलरिज ने कविता में 'प्रगीत' तत्त्व पर बहुत बल दिया है और बारम्बार 'प्रगीतात्मकता' को कवित्व का पर्याय माना है। इसी तर्क के आधार पर वे काव्य के स्वरूप में लम्बी कविता का अस्तित्व स्वीकार नहीं करते। उनकी दृढ़ मान्यता है कि लम्बी कविता पूरी-की-पूरी न तो कवित्वपूर्ण हो सकती है और न होनी चाहिए। इतना ही नहीं, इस सन्दर्भ में उनका यह मत भी उल्लेखनीय है कि जिन अंशों में काव्यात्मकता नहीं है, उनमें छन्द की सहायता से काव्यात्मकता का पूर्ण संचार हो जाएगा और काव्य सर्वाधिक आनन्द तभी देता है जब उसे सामान्य तौर पर ही समझा जाए, न कि पूरी तरह। इस

तरह कवि कर्म के आलोक में वे संश्लिष्टता और सम्पूर्णता पर बहुत अपना ध्यान अधिक केन्द्रित करते हैं। उनकी नजर में कवि कल्पनादर्शी न होकर संश्लिष्ट व्यक्तित्व का स्वामी होता है तथा अपने आदर्श रूप में वह मानव की सम्पूर्ण आत्मा को गतिशील करता है।

वस्तुत: यथार्थ चित्रण के लिए भी काव्य में समग्र दृष्टि का होना आवश्यक माना जाता है। जैसा कि कॉलरिज की स्थापना में सब कुछ एक अनन्त गतिशील अमूर्तता है तथा सम्पूर्णता ही यथार्थ है। कवि कर्म की आधारभूत शक्ति जो कि कल्पना है, उत्तरोत्तर यही समेकित दृष्टि हासिल करने के लिए निरन्तर संघर्ष करती रहती है। काव्य में विविधता के साथ-साथ एकता की मौजूदगी भी अति आवश्यक है। क्योंकि, एकता के अभाव में विविधता कोई समग्र प्रभाव नहीं छोड़ सकती।

कॉलरिज 'कविता' और 'कवि' की परस्परता को मौलिक ढंग से व्याख्यायित करते हैं। उनके अनुसार कविता का सम्बन्ध कवि की प्रतिभा से जुड़ा हुआ है। इस आलोक में उन्होंने महाकवि शेक्सपियर की आरम्भिक कविता की दो पंक्तियों के आधार पर कवि की मौलिक प्रतिभा के लक्षणों को रेखांकित करने का प्रयास किया है; यथा –

1) पद्य रचना के उत्कृष्ट माधुर्य को ही सैम्युअल टेलर कॉलरिज कवि की पहली मौलिक प्रतिभा मानते हैं क्योंकि जिस मनुष्य की आत्मा में संगीत नहीं है, वह कभी सच्चा कवि नहीं हो सकता। जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है कि कविता का शिल्प तो निरन्तर अभ्यास से विकसित किया जा सकता है, लेकिन संगीतात्मक आनन्द की चेतना जो कि वैसा ही आनन्द उत्पन्न भी कर सके, प्रतिभा या कल्पना की देन है। इस प्रकार संगीतात्मक आनन्द के साथ ही अनेकता को एक समन्वित प्रभाव में ढालने, अनेक विचार शृंखलाओं को संशोधित करके एक मूल विचार या अनुभूति का अंग बनाने की प्रतिभा में सुधार परिष्कार तो सम्भव है, लेकिन इसे सीखा नहीं जा सकता।

2) लेखक की निजी रुचियों तथा परिस्थितियों से सर्वथा दूरवर्ती विषयों का चयन काव्य प्रतिभा का दूसरा महत्त्वपूर्ण लक्षण है। इस परिप्रेक्ष्य में 'कवि की एकदम निजी अनुभूतियाँ' साधारणीकरण की दिशा में अभिप्रेरित करती है और कवि सहज ही पाठक की सहानुभूति अर्जित कर सकता है।

3) कविता में बिम्ब प्रबल भाव का अंग बनकर ही प्रतिभा के निदर्शक बनते हैं। इसलिए बिम्ब में 'अनेकता में एकता' या 'अनुक्रम को क्षण' में बदलने की ताकत ही महत्त्वपूर्ण घटक और महत्त्वपूर्ण आयाम है। यही कारण है कि बिम्ब में सुन्दरता, अनुकरण तथा चित्रण का क्रम प्रबल भाव के बाद आता है।

4) वैचारिक गम्भीरता और ऊर्जस्विता को कॉलरिज ने मौलिक प्रतिभा का अन्तिम लक्षण माना है। उनके अनुसार कोई भी व्यक्ति गम्भीर दार्शनिक हुए बिना महान् कवि नहीं हुआ, क्योंकि कविता मानव के समस्त ज्ञान, भाव, विचार, मनोवेग और भाषा की सुगन्ध है।

2.4.3.2. काव्य और छन्द

सैम्युअल टेलर कॉलरिज ने विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्य और छन्द सम्बन्धी स्थापना की आलोचना करते हुए छन्द की उत्पत्ति और प्रभाव पर अपना मत प्रकट किया है। उल्लेखनीय है कि विलियम वर्ड्सवर्थ के काव्यशास्त्रीय चिन्तन में छन्द का आकर्षण ऊपरी चीज है तथा यह काव्य हेतु अनिवार्य नहीं है।

लेकिन, अपनी महत्त्वपूर्ण कृति 'बायोग्राफिया लिटेरेरिया' के अट्ठारहवें अध्याय में कॉलरिज ने यह स्पष्ट किया है कि भाव की गतिविधियों को नियंत्रण में रखने के सहज प्रयास के प्रभावस्वरूप जो मानसिक सन्तुलन आता है, उसी से छन्द की उत्पत्ति होती है। उन्होंने काव्य प्रक्रिया की तरह छन्द का द्विपक्षीय विवेचन प्रस्तुत करते हैं। जहाँ एक ओर उसका एक पक्ष स्वत:स्फूर्त है तो दूसरी ओर दूसरा पक्ष विवेक नियंत्रित होता है। चूँकि, छन्द का सम्बन्ध भावदीप्त मनोदशा से है, इसलिए उसमें एक प्रकार की सहजता होती है। हालाँकि, कविता में कृत्रिम रूप से चेतन क्रिया द्वारा विभिन्न तत्त्व छन्द में ढलते हैं। अस्तु, छन्द चेतन और अचेतन, दोनों है। इस आलोक में कॉलरिज चेतन और अचेतन छंदों की केवल सहभागिता को ही पर्याप्त नहीं मानते हैं, अपितु उनमें सामंजस्य की आवश्यकता पर अधिक बल देते हैं। छन्द के प्रभाव के विषय में उन्होंने यह मत प्रकट किया है कि छन्द सामान्य भावों की संवेदनशीलता में वृद्धि के साथ-साथ पाठक के अवधान को अभिप्रेरित करता है। इतना ही नहीं, छन्द हमारी अनुभूति में उत्कर्ष का कारण होता है तथा परिचित मनोभावों को सामान्यता के स्तर से ऊँचा उठा देता है।

कॉलरिज के अनुसार छन्द को कविता की वस्तु और भाषा के अनुरूप होना चाहिए। क्योंकि जब छन्द कविता की वस्तु और भाषा के अनुरूप होता है तो कविता के प्रत्येक घटक की ओर निरन्तर और स्पष्ट रूप से पाठक का ध्यान आकर्षित करता चलता है। वह पाठकीय उत्सुकता को तेजी से परिशान्त और पुन: उद्बुद्ध करता हुआ एक प्रकार की आनन्दपूर्ण मनोदशा में अन्त तक आगे बढ़ जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में उनकी दृढ़ मान्यता है कि छन्द को अर्थ का अनुगामी, साथ-ही-साथ काव्य वस्तु को भी छन्द के अनुरूप होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो हमें एक प्रकार का झटका सा लगता है। और, यह झटका लगभग वैसा ही होता है जैसा कि हम अँधेरे में किसी सीढ़ी के अन्तिम पायदान से कूदे हों, जबकि हमने अपनी मांसपेशियों को तीन-चार पायदान कूदने के लिए तैयार कर लिया हो। इस तरह कुल मिलाकर कॉलरिज ने कविता के साथ छन्द के वस्तुपरक सम्पर्क पर बल दिया है, क्योंकि कविता सर्वोतम क्रम में सर्वोतम शब्द है।

2.4.3.3. काव्य और भाषा

पाश्चात्य काव्य चिन्तन में भाषा को सैम्युअल टेलर कॉलरिज ने विशेष महत्त्व देकर विवेचित किया है और कालान्तर में यह शैली आगन्तुक काव्यशास्त्रियों ने भी पल्लवित की है। जैसा कि कॉलरिज ने यह विचार

व्यक्त किया है कि आज यदि रचना की उत्कृष्टता का सबसे अधिक वस्तुनिष्ठ कसौटी हो सकती है तो वह भाषा ही हो सकती है।

वस्तुतः, कॉलरिज काव्यभाषा में स्वाभाविक भाषा का प्रयोग सर्वथा अनुचित मानते हैं। उनके विचार में प्रत्येक मनुष्य की भाषा उसके ज्ञान, क्रिया व संवेदना के अनुसार अलग-अलग होती है। इसलिए मनुष्य की भाषा को वैयक्तिक, सामाजिक तथा शब्दों और मुहावरों की विशेषताएँ नियंत्रित करती हैं।

गद्य और पद्य की भाषा में अभिन्नता पर उन्होंने गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया है। इस सन्दर्भ में उन्होंने विलियम वर्ड्सवर्थ द्वारा प्रयुक्त 'एसेंशल' शब्द का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट कहा है कि 'मैं अपने साक्ष्य में प्रत्येक देश और प्रत्येक युग के सर्वोत्कृष्ट कवियों के प्रयोगों की ओर ध्यान आकृष्ट करता हूँ कि अनिवार्य शब्द के प्रत्येक अर्थ में गद्य और छंदोबद्ध रचना की भाषा में सचमुच अनिवार्य भेद हो सकता है और होना चाहिए। इस प्रकार कॉलरिज के काव्य चिन्तन में यह सुस्थापित है कि भाषिक रचना विधान से निरपेक्ष रचना की विषय वस्तु का विवेचन और उसकी सफलता-असफलता का वास्तविक मूल्यांकन नहीं हो सकता । भाषा जितनी ही सर्जनात्मक होगी, रचना उतनी ही विशुद्ध और प्रामाणिक होगी।

2.4.3.4. कल्पना सिद्धान्त

सैम्युअल टेलर कॉलरिज ने दर्शन और तत्त्व चिन्तन के आधार पर अपने काव्य सिद्धान्तों की स्थापना की है। उनके अनुसार संसार के पदार्थ ब्रह्म के विषय या विचार हैं और जगत् विषयाकृत ब्रह्म है। इस सन्दर्भ में ब्रह्म और प्रकृति का संयोग कल्पना द्वारा होता है। उल्लेखनीय है कि ब्रह्म कल्पना बाह्य प्रकृति को ब्रह्म के सम्मुख उपस्थित करती है जिससे ब्रह्म का विषयीकरण होता है। इस प्रकार यह विश्व ब्रह्म की कला है। मानव कल्पना प्रकृति के उस क्षेत्र को मानव मन के सामने लाती है जिसमें मानव मन का व्यवहार हो। यदि विश्व ब्रह्म के आत्मज्ञान का कारण कल्पना है तो ऐसी कल्पना को सैम्युअल टेलर कॉलरिज प्रथम पदस्य कल्पना कहते हैं। यह प्रथम पदस्य कल्पना वस्तुतः प्रत्यक्षीकरण के अतिरिक्त कुछ नहीं है। ब्रह्म के विचार विश्व में प्रविष्ट हैं और बिम्ब के पदार्थ उन्हें प्रतिबिम्बित करते हैं। ठीक इसी प्रकार मनुष्य के विचार मनुष्य जगत् में प्रविष्ट हैं और मनुष्य के क्षेत्र में उपस्थित पदार्थ उसके विचारों को प्रतिबिम्बित करते हैं। इस प्रकार मनुष्य कल्पना ब्रह्म कल्पना का ही प्रतिनाद है, दिव्य प्रेरणा है और ईश्वर की सर्जना शक्ति की सहोदरा है। हालाँकि, ब्रह्म कल्पना का विस्तार अधिक है तथा मानव कल्पना का क्षेत्र छोटा है। इस प्रकार कॉलरिज सम्पूर्ण सृष्टि को चेतना की अभिव्यक्ति मानता है। जड़ का चेतन पर प्रभाव पड़ता है और काव्य का सृजन होता है।

विलियम वर्ड्सवर्थ की एक कविता सुनकर कॉलरिज की भावना शक्ति और बुद्धि दोनों चेतना अवस्था में आ गई तथा उसे सौन्दर्य सहित सत्य का भी प्रत्यक्षीकरण हुआ। साथ-ही-साथ उन्हें काव्य सृजन की प्रक्रिया में निहित 'कल्पना शक्ति' की महत्ता का आभास हुआ तथा उन्होंने सौन्दर्य विधायनी व सर्जनात्मक शक्ति के रूप में

कल्पना की उपादेयता को स्थापित किया। कॉलरिज कल्पना के दो भेद स्वीकार करते हैं, पहला – आद्य या मुख्य या प्राथमिक कल्पना तथा दूसरा, विशिष्ट या प्रतिनिधि कल्पना।

प्राथमिक कल्पना के आलोक में कॉलरिज ने ब्रह्मवादियों की तरह आत्मा व जगत् को एक ही सत्ता के रूप में स्वीकार करते हैं। लेकिन अन्तर यह है कि ब्रह्मवादी जहाँ आत्मा और जगत् के अलग-अलग प्रतीत होने का कारण माया की मौजूदगी मानते हैं, वहीं कॉलरिज ने उसका कारण प्राथमिक कल्पना को स्वीकार किया है। इसी प्राथमिक कल्पना के कारण एक ही चेतना खण्ड रूप में दिखाई देती है। यह प्राथमिक कल्पना मानव मन में मानसिक जगत् को प्रस्तुत करती है। यह कल्पना मानव मानव मन की जीवन्त शक्ति है और सम्पूर्ण मानव प्रत्यक्षीकरण का मुख्य माध्यम है।

वस्तुतः यही प्राथमिक कल्पना विषय और विषयी को दो भागों में बाँटती है। चेतना को खण्ड-खण्ड करके यही विषय और विषयी को अलग करती है। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त विषय बोध को कल्पना ही व्यवस्थित करती है और यही हमारे अव्यवस्थित बोध बिम्बों को ज्ञान में बदलती है।

विशिष्ट कल्पना कलाकारों में पाई जाती है, सामान्य मनुष्य में नहीं। इसे प्राथमिक कल्पना की प्रतिध्वनि कहा जा सकता है। एक तरह से यह प्राथमिक कल्पना का मानवीय प्रयोग है। इस बाह्य संसार का प्रस्तुतीकरण और उसके पुन:सृजन में विशिष्ट कल्पना ही काम आती है। यह अनेक विषयों में एकसूत्रता उत्पन्न करती है। विषय और विषयी को समन्वित करती है तथा अनेक रूपों और व्यापारों को अखण्ड रूप प्रदान करती है। भिन्न-भिन्न विषयों को एकत्रित करती है। इस प्रकार विशिष्ट अथवा प्रतिनिधि कल्पना का प्रयोग इच्छा से सहज रूप में किया जाता है।

कॉलरिज ने स्पष्ट कहा है कि कलाकार प्रकृति की नकल न करके अपनी भावना के अनुसार पुन: उसका सृजन करता है जिससे आत्मा को आनन्द की अनुभूति होती है। जो तत्त्व जगत् से उसकी चेतना में आते हैं, कलाकार अपनी भावना के अनुसार उसका एकत्रीकरण करता है। वह प्रकृति को अधिक सुन्दर रूप में उपस्थित करता है। इस प्रकार कलाकार किसी वस्तु के अपूर्ण नमूनों को पकड़कर उसकी पूर्णता के व्यय तक पहुँच जाता है। इस प्रक्रिया में वह कुछ विवरणों को छोड़ता है, कुछ नए विवरणों को जोड़ता है और वस्तु के परिवर्तित रूप की परिकल्पना कर लेता है। कल्पना द्वारा निर्मित वस्तु का यह परिवर्तित रूप कलाकार को सन्तोष प्रदान करता है। इस प्रकार कॉलरिज के इस विवेचन ये यह सिद्ध होता है कि कल्पना विभिन्न तत्त्वों का एकीकरण करने वाली मानसिक शक्ति है। कल्पना विरोधी का सामंजस्य करती है। दोनों के मध्य सन्तुलन स्थापित करती है। वह ससीम-असीम, समानता-असमानता, सामान्य-विशिष्ट, विचार-बिम्ब, नए-पुराने, विवेक, संयम, उत्साह और उत्तेजना का सामंजस्य करती है।

कॉलरिज कोरे यथार्थ के अनुकरण को यांत्रिक अनुकरण तथा प्रकृति के अनुकरण को चोरी कहता है। उसके अनुसार कवि को ऐसे अनुकरण से बचना चाहिए। उसकी दृष्टि में कलाकार तो कल्पना द्वारा जीवन का

सजीव रूपान्तरण और सृजन करता है। कल्पना जहाँ एक ओर यथार्थ और मन के बीच के अन्तर को पाटती है, वहीं दूसरी ओर आन्तरिक और बाह्य का स्मरण भी करवाती है। उसी के द्वारा कलाकार प्रकृति बाह्य रूप को अपने मानस में गढ़ लेता है। यदि कोई कलाकार प्रकृति को खण्डित रूप में प्रस्तुत करता है, तो वह प्रकृति के अंग-भंग का दोषी होगा। उसकी कल्पना की सिद्धि प्रकृति को इकाई रूप में प्रस्तुत करने में है। इस विधि से ही प्रकृति की आत्मा, उसका विशिष्ट व्यक्तित्व और सौन्दर्य प्रत्यक्ष हो सकता है। इसके अभाव में प्रकृति का अनुकरण जड़, मृत और निष्क्रिय रहेगा। इस प्रकार वह केवल ललित कल्पना से उत्पन्न पदार्थों को प्रस्तुत कर सकता है। इसलिए कॉलरिज का मानना है कि कल्पना अनुकरण न होकर वस्तु का पुनर्निर्माण है जो मृत वस्तुओं में भी प्राण प्रतिष्ठित कर देती है।

2.4.4. सैम्युल टेलर का काव्यशास्त्रीय अवदान

इंग्लैंड के स्वच्छंदतावादी काव्य चिन्तकों में सैम्युअल टेलर कॉलरिज ने काव्य की स्वच्छंदतावादी मान्यताओं की तात्त्विक व्याख्या की है। वैसे कॉलरिज ने भी अन्य काव्य चिन्तकों की भाँति अकृत्रिमता, अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यंजना की सरलता को सबसे अधिक महत्त्व प्रदान किया है। इन तत्त्वों से रहित कविता को वे कविता मानने के पक्ष में नहीं हैं। इतना ही नहीं, कॉलरिज का एक वैशिष्ट्य यह भी है कि वे कोरे भावोच्छवास को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए वे काव्य में भावना और चिन्तन की एकत्र उपस्थिति का आग्रह करते हैं। उनकी प्रबल धारणा है कि काव्य में हृदय और मस्तिष्क दोनों का संयोग अपेक्षित होता है। केवल भावना काव्य के लिए पर्याप्त नहीं है, केवल भौतिकता काव्य में तिरस्करणीय है; पर दोनों का एकीकृत रूप श्रेष्ठ काव्य का उपादान हैं। अपने काव्य चिन्तन में कॉलरिज कल्पना तत्त्व पर भी विशेष बल देते हैं।

हालाँकि, सौन्दर्यशास्त्र और काव्यशास्त्र के अन्तर को स्थापित नहीं कर पाने के कारण कॉलरिज की आलोचना की जाती है। चूँकि, उनका दार्शनिक आधार उलझन भरा है, इसलिए उनका कल्पना सम्बन्धी विचार भी सर्वग्राह्य नहीं हो पाया है और उनमें विरोधाभास है। उदाहरण के लिए एक ओर जहाँ उन्होंने मनोवेगों को कविता के लिए आवश्यक मानते हैं, वहीं दूसरी ओर कवि को निर्वैयक्तिक होने का परामर्श भी देते हैं। लेकिन, इन मुख्य स्थापनाओं में दोष होते हुए भी कॉलरिज ने सत्य, काव्य आदि का मौलिक विवेचन किया है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में कॉलरिज का योगदान अविस्मरणीय है।

2.4.5. सारांश

अपने काव्य चिन्तन में सैम्युअल टेलर कॉलरिज ने कवि की दो शक्तियों के प्रति विशेष आग्रह सूचित किया है। इनमें से पहली प्रकृति के निरीक्षण की शक्ति है और दूसरी उन निरीक्षित वस्तुओं का अध्याहार करने की शक्ति है। वे कविता में आनन्द को स्वतंत्र स्थान प्रदान करने के हिमायती नहीं हैं, क्योंकि वे आनन्द को सौन्दर्याश्रित मानते हैं और सौन्दर्य को कल्पना शक्ति पर आश्रित। काव्य सर्जन में कल्पना शक्ति को उन्होंने इतना महत्त्व दिया है कि उसे ईश्वर का पर्याय तक घोषित कर दिया है। वस्तुतः कॉलरिज की काव्य सम्बन्धी धारणा

का मुख्य आधार जैववादी सिद्धान्त है। उन्होंने लॉक और हार्टली आदि की साहचर्यवादी तथा यांत्रिकतावादी सिद्धान्त की आलोचना करके अपने जैववादी सिद्धान्त की स्थापना की है। जिस प्रकार मनुष्य का उसके अंगों के साथ अंगी-अंग रूप में विकास होता है, उसी प्रकार काव्य की सृष्टि इसी ढाँचे पर होती है। उसमें भाव, शब्द, अर्थ, बिम्ब, अलंकार, छन्द आदि अलग से नहीं जुड़ते, अपितु उनके सहभाव से ही काव्य की सृष्टि होती है। सारत: कॉलरिज के ये विचार भारतीय आचार्य कुन्तक और पाश्चात्य विचारक क्रोचे की अन्त:प्रजा और अभिव्यंजना के समकक्ष हैं।

2.4.6. शब्दावली

जीवन्त	:	सक्रिय, जैविक
खण्ड	:	घटक, तत्त्व
शास्त्र	:	वैज्ञानिक कृति
पद्धति	:	एकता और अग्रगति
आवयविकता	:	काव्य गुण

2.4.7. उपयोगी ग्रन्थ सूची

1. जैन, निर्मला, काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. गुप्त, शान्ति स्वरूप, पाश्चात्य आलोचना के काव्य सिद्धान्त, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. जैन, निर्मला, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. श्रीवास्तव, अर्चना, भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. सिंह, विजय बहादुर, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
6. भारद्वाज, मैथिलीप्रसाद, पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला.

2.4.8. सम्बन्धित प्रश्न

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कॉलरिज के अनुसार कविता क्या है ?
2. काव्य में मौलिक प्रतिभा के लक्षणों पर प्रकाश डालिए।
3. कॉलरिज की आलोचनात्मक दृष्टि की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।
4. "कल्पना मानव मन की जीवन्त शक्ति है"। स्पष्ट कीजिए।
5. "कल्पना विरोधी तत्त्वों के बीच सामंजस्य स्थापित करती है"। टिप्पणी कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. "कविता सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम विधान हैं"। कॉलरिज के इस कथन का परीक्षण कीजिए।
2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धान्त की समीक्षा कीजिए।

. --

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. कॉलरिज ने कल्पना शक्ति के कितने रूपों की चर्चा की है ?
   (a) दो
   (b) तीन
   (c) चार
   (d) पाँच

2. 'बायोग्राफिया लिटरेरिया' के रचयिता हैं –
   (a) अरस्तू
   (b) विलियम वर्ड्सवर्थ
   (c) सैम्युअल टेलर कॉलरिज
   (d) मैथ्यू आर्नल्ड

3. "कविता उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रम विधान है"। यह मत किस विचारक का है ?
   (a) कॉलरिज
   (b) अरस्तू
   (c) लोंजाइनस
   (d) विलियम वर्ड्सवर्थ

4. जीवन्त से कॉलरिज का अभिप्राय है –
   (a) सक्रिय
   (b) निष्क्रिय
   (c) यांत्रिक
   (d) इनमें से कोई नहीं।

5. कॉलरिज ने किसके काव्यभाषा सम्बन्धी विचारों की आलोचना की है –
   (a) विलियम वर्ड्सवर्थ
   (b) रिचर्ड्स
   (c) एलियट
   (d) उपर्युक्त सभी

❖❖❖